सांध्य दैनिक
4PM
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
• वर्षः 8 • अंकः 43 • पृष्ठः 8 • लखनऊ, मंगलवार, 15 मार्च, 2022
मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

बड़ी वस्तु को देख कर छोटी वस्तु को फेंक नहीं देना चाहिए। जहां छोटी सी सुई काम आती है, वहां तलवार बेचारी क्या कर सकती है?
-रहीम दास

12 से 14 साल तक के बच्चों को... 7
यूपी में खड़े होने के लिए कांग्रेस... 3
एके शर्मा व बेबीरानी मौर्य डिप्टी... 2

भाजपा सांसदों से बोले पीएम मोदी

मेरे कहने पर काटे गए आपके बेटे-बेटियों के टिकट

» पार्टी में पारिवारिक राजनीति को अनुमति नहीं, वंशवाद की राजनीति लोकतंत्र के लिए खतरनाक

» भाजपा संसदीय दल की बैठक में दिया सख्त संदेश, वंशवादी पार्टियों के खिलाफ लड़ती रहेगी भाजपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भाजपा संसदीय दल की बैठक आज अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में हुई। बैठक को संबोधित करते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने भाजपा सांसदों को परिवारवादी राजनीति पर सख्त संदेश दिया। उन्होंने कहा कि पार्टी में पारिवारिक राजनीति को अनुमति नहीं है और मेरे कहने पर आपके बेटे-बेटियों के टिकट काटे गए हैं।

सूत्रों के अनुसार पीएम मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि अगर किसी भाजपा सांसद या मंत्री के बेटे या बेटी की उम्मीदवारी खारिज हुई तो इसके पीछे मैं जिम्मेदार हूं। पार्टी में पारिवारिक राजनीति की अनुमति नहीं होगी। भाजपा अन्य पार्टियों में वंशवाद की राजनीति के खिलाफ लड़ेगी। उन्होंने कहा कि परिवारवादी पार्टियां देश को खोखला कर रही हैं। उन्होंने कहा कि वंशवाद की राजनीति लोकतंत्र के लिए खतरनाक है और इसके खिलाफ हमें लड़ना होगा। पीएम मोदी ने कहा कि मेरी वजह से ही कई सांसदों के बच्चों को हाल ही में संपन्न विधान सभा चुनावों में टिकट नहीं मिला। वंशवाद की राजनीति से लड़ने के लिए भाजपा को संगठन के भीतर इस तरह की प्रथाओं पर लगाम लगानी होगी। पीएम मोदी ने हाल ही में रिलीज हुई फिल्म द कश्मीर फाइल्स की भी सराहना की और सुझाव दिया कि ऐसी फिल्में अधिक बार बनाई जानी चाहिए। इससे पहले चार राज्यों में बड़ी जीत के लिए सभी सांसदों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का फूलों की माला पहनाकर स्वागत किया। बैठक शुरू होने से पहले स्वर कोकिला लता मंगेशकर को भी श्रद्धांजलि दी गई।

जहां कम वोट मिले वहां समीक्षा करें : पीएम

बैठक में मौजूद भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि पीएम मोदी ने सांसदों से कहा कि वे अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में ऐसे 100 बूथों की पहचान करें जहां भाजपा को अपेक्षाकृत कम वोट मिले और इसके पीछे के कारणों की पहचान करें। हालांकि, उन्होंने पार्टी को समर्थन देने के लिए सांसदों को भी धन्यवाद दिया।

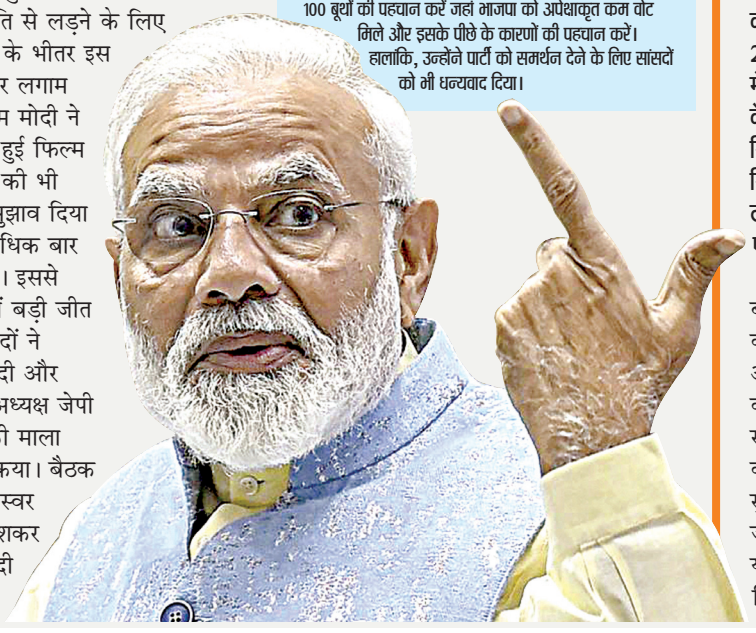

पाक में गिरने वाली मिसाइल गलती से छूटी थी, करा रहे हैं जांच : राजनाथ

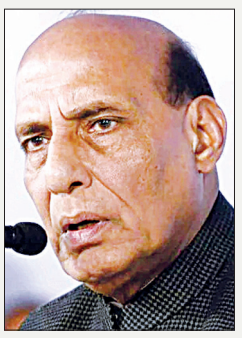

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आज राज्य सभा में अनजाने में पाक में हुई मिसाइल फायरिंग पर बयान दिया। उन्होंने कहा कि इस सदन को 9 मार्च 2022 को हुई एक घटना के बारे में बताना चाहता हूं। यह निरीक्षण के दौरान एक आकस्मिक मिसाइल रिलीज से संबंधित है। मिसाइल यूनिट के नियमित रखरखाव और निरीक्षण के दौरान शाम लगभग 7 बजे गलती से एक मिसाइल छूट गई जो कि पाकिस्तान के एक क्षेत्र में जाकर गिरी।

उन्होंने कहा कि घटना खेदजनक है लेकिन राहत की बात यह रही कि कोई नुकसान नहीं हुआ। सरकार ने इस मामले को बहुत गंभीरता से लिया है और उच्च स्तरीय जांच के लिए आधिकारिक आदेश दिए हैं। इस जांच से दुर्घटना के सही कारण का पता चलेगा। इस घटना के मद्देनजर संचालन, रखरखाव और निरीक्षण के लिए मानक संचालन प्रक्रियाओं की समीक्षा की जा रही है। हम अपने हथियार प्रणालियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं। यदि कोई कमी पाई जाती है तो उसे तत्काल दूर किया जाएगा। गौरतलब है कि यह मिसाइल पाकिस्तान के पंजाब में मियां चन्नू इलाके में गिरी थी।

कर्नाटक हाईकोर्ट का बड़ा फैसला

यूनिफॉर्म पहनने से मना नहीं कर सकते छात्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरु। हिजाब विवाद पर कर्नाटक हाईकोर्ट ने आज अहम फैसला सुनाया है। कोर्ट ने छात्राओं की याचिका को खारिज करते हुए कहा है कि हिजाब इस्लाम धर्म का अनिवार्य हिस्सा नहीं है। स्कूल-कॉलेज में छात्र यूनिफॉर्म पहनने से मना नहीं कर सकते हैं।

कोर्ट ने कहा है कि स्कूल यूनिफार्म को लेकर बाध्यता एक उचित प्रबंधन है। छात्र या छात्रा इसके लिए इंकार नहीं कर सकते हैं। इस मामले की सुनवाई के लिए नौ फरवरी को चीफ जस्टिस रितु राज अवस्थी, कृष्णा एस दीक्षित और जेएम काजी की बेंच का गठन किया गया था। लड़कियों की ओर से याचिका दायर कर मांग की गई थी कि क्लास के दौरान भी उन्हें हिजाब पहनने की अनुमति दी जाए क्योंकि हिजाब उनके धर्म का अनिवार्य हिस्सा है।

» इस्लाम में अनिवार्य हिस्सा नहीं हिजाब, छात्राओं की याचिका खारिज

भाजपा पर अखिलेश का हमला, कहा छल से नहीं मिलता बल

पोस्टल बैलेट में सपा को मिले 51 फीसदी से अधिक वोट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने एक बार फिर ईवीएम को लेकर भाजपा पर हमला बोला है। उन्होंने पोस्टल बैलेट के वोटों का हवाला देते हुए कि सत्ता धारी याद रखे कि छल से बल नहीं मिलता है।

अखिलेश यादव ने ट्वीट में लिखा, पोस्टल बैलेट में सपा-गठबंधन को मिले 51.5फीसदी वोट व उनके हिसाब से 304 सीटों पर हुई सपा-गठबंधन की जीत चुनाव का सच बयान कर रही है। पोस्टल बैलेट डालने वाले हर उस सच्चे सरकारी कर्मी, शिक्षक और मतदाता का धन्यवाद जिसने पूरी ईमानदारी से हमें वोट दिया। सत्ताधारी याद रखें, छल से बल नहीं मिलता। इसके पहले उन्होंने कहा था कि भाजपा की छल कपट की सियासत के चलते राजनीति की शुचिता खतरे में पड़ गई है। देश आजादी के 75 वर्ष में अमृत महोत्सव मनाने जा रहा है, लेकिन स्वतंत्रता संघर्ष के जो मूल्य थे, वे नेपथ्य में चले गए हैं। लोकतंत्र का मूलाधार खतरे में है। वस्तुत: विधान सभा चुनाव में जनता भाजपा की भय-भ्रम की राजनीति की शिकार हो गई।

सपा प्रमुख ने ईवीएम पर इशारों में उठाया सवाल

एके शर्मा व बेबीरानी मौर्य डिप्टी सीएम की रेस में, पंकज सिंह भी बनेंगे मंत्री

» कैबिनेट में नए लोगों को मिलेगा मौका, यूपी में 40 से अधिक मंत्री लेंगे शपथ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में भाजपा की नई सरकार में मुख्यमंत्री के साथ 40 से अधिक मंत्री शपथ लेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित केंद्र सरकार के मंत्रियों और भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारियों की मौजूदगी में 21 या 22 मार्च को शपथ ग्रहण समारोह हो सकता है। भाजपा ने लोकसभा चुनाव 2024 को देखते हुए मंत्रिमंडल में जातीय और क्षेत्रीय संतुलन के लिए करीब दो दर्जन से अधिक मौजूदा मंत्रियों के साथ नए चेहरों को भी शामिल करने की रणनीति बनाई है। सरकार के स्वरूप को लेकर दो दिन तक दिल्ली में पीएम मोदी, शाह, नड्डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, महामंत्री संगठन बीएल संतोष, यूपी चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान और सह प्रभारी अनुराग ठाकुर से मुलाकात करने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लखनऊ लौट आए हैं।

सूत्रों के अनुसार योगी, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह और प्रदेश महामंत्री संगठन सुनील बंसल आगामी दिनों में फिर दिल्ली जाएंगे। पूर्व एडीजी और कन्नौज सदर से

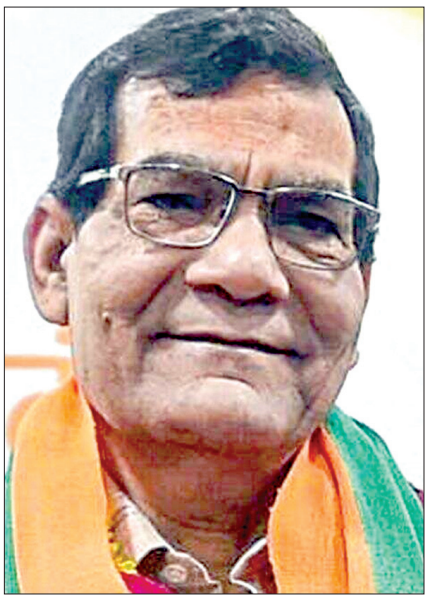

विधायक असीम अरुण, उत्तराखंड की पूर्व राज्यपाल और आगरा ग्रामीण की विधायक बेबीरानी मौर्य, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष एवं एमएलसी अरविंद कुमार शर्मा, ईडी के पूर्व संयुक्त निदेशक एवं सरोजनी नगर से विधायक राजेश्वर सिंह को भी मंत्री बनाया जा सकता है। साहिबाबाद से सर्वाधिक मतों से जीते सुनील शर्मा, नोएडा से 1.80 लाख से अधिक मतों से जीते पंकज सिंह को भी मंत्री बनाया जा सकता है। उधर, भाजपा संसदीय बोर्ड ने यूपी में भाजपा विधायक दल नेता के चुनाव के लिए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह को पर्यवेक्षक और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास को सह पर्यवेक्षक नियुक्त किया है।

खन्ना, शाही, महाना, श्रीकांत, टंडन फिर बन सकते हैं मंत्री

योगी के पहले कार्यकाल में वित्त मंत्री सुरेश खन्ना, कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, चिकित्सा मंत्री जय प्रताप सिंह, औद्योगिक विकास मंत्रर सतीश महाना, ऊर्जा मंत्री श्रीकांत शर्मा, एमएसएमई सिद्धार्थनाथ सिंह, जितिन प्रसाद, नगर विकास मंत्री आशुतोष टंडन, अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी, पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री अनिल राजभर, जलशक्ति मंत्री महेंद्र सिंह, पंचायतीराज मंत्री भूपेंद्र चौधरी को फिर जगह मिल सकती है। राज्यमंत्री रहे संदीप सिंह, बदलेव सिंह औलख, मोहसिन रजा और गुलाब देवी को भी फिर मौका मिल सकता है।

122 सीटों पर भाजपा ने तय किए थे बसपा के प्रत्याशी : राजभर

» राजभर का दावा, एक कार्यालय में तय हुए नाम तो दूसरे में मिले सिंबल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) के अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर ने यूपी विधानसभा चुनाव में हार मिलने के बाद एक नया शिगूफा छोड़ दिया है। उनका कहना है कि पूर्वांचल की 122 सीटों पर प्रत्याशियों के नामों पर निर्णय भाजपा कार्यालय में हुआ जबकि उन्हें सिंबल बसपा कार्यालय में दिया गया। उन्होंने दावा किया कि वे इसका सबूत भी दे सकते हैं। ओपी राजभर ने कहा चाहे बसपा हो या कांग्रेस, चार बार सत्ता में रह चुकीं पार्टियों ने भाजपा को समर्थन दिया।

उनके वोट कहां गए। उन्होंने कहा, हमने विधानसभा वार रिव्यू करने का निर्णय लिया है। उसकी रिपोर्ट्स में हमारी जो कमियां मिलेगीं, जिन्हें हम ठीक करने की कोशिश करेंगे। बसपा और भाजपा का मेल हो गया, जो यूपी में बड़ा खेल हो गया। हाल ही में संपन्न यूपी विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी (सपा) के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ने वाली सुभासपा को छह सीटों पर जीत मिली थी। सुभासपा ने 18 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे। ओपी राजभर इससे पहले भी कई विवादित बयान दे चुके हैं। चुनाव से पहले उन्होंने बेसहारा पशुओं के मुद्दे पर एक जनसभा में कहा था कि भाजपा वाले दिखें तो उन्हें सांड़ के साथ ही बांध दो। इसके अलावा उन्होंने आरोप लगाया था कि योगी आदित्यनाथ उनकी हत्या कराना चाहते हैं। उन्होंने चुनाव से पहले वादा किया था कि उनकी सरकार बनी तो बाइक पर तीन लोगों के बैठने पर चालान नहीं कटेगा।

पूर्व काबीना मंत्री रामवीर उपाध्याय को हाईकोर्ट से मिली राहत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। पूर्व कैबिनेट मंत्री रामवीर उपाध्याय को हाईकोर्ट से राहत नहीं मिली है। मंत्री ने हाईकोर्ट में एससी/एसटी कोर्ट के आदेश को चुनौती दी थी। मंत्री पर प्रतिवादी की ओर से अपरहरण और एससी/एसटी एक्ट में रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए सत्र न्यायाधीश के समक्ष आवेदन किया गया था, जिस पर कोर्ट ने उसे शिकायत के रूप में स्वीकार करते हुए मंत्री को समन जारी कर दिया था।

मंत्री ने हाईकोर्ट में समन को अवैध बताते हुए उसे रद्द करने की मांग की थी। कोर्ट ने उस पर सुनवाई करते हुए याचिका को रद्द कर दिया और सुप्रीम कोर्ट के आदेश के तहत मामले की सुनवाई के लिए एमपीएमएलए कोर्ट भेज दिया। याची मंत्री रामवीर उपाध्याय की ओर से तर्क दिया गया कि एससी/एसटी सत्र न्यायाधीश की ओर से जारी समन गलत है। एसटी/एसटी कोर्ट को याची के मामले में सुनवाई का अधिकार नहीं है। कोर्ट ने दोनों पक्षों को सुनने केबाद पाया कि एससी/एसटी कोर्ट के द्वारा की गई कार्रवाई विधि सम्मत है। उसे निरस्त नहीं किया जा सकता है। लिहाजा, कोर्ट ने पूर्व मंत्री की याचिका को खारिज करते हुए मामले की सुनवाई के लिए हाथरस जिले के एमपीएमएल कोर्ट को भेज दिया।

बैलेट पेपर पर सपा जीती, ईवीएम ने किया खेल : स्वामी प्रसाद मौर्य

» ईवीएम और भाजपा पर निशाना साधा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी चुनाव 2022 को पूर्ण बहुमत से जीतने के बाद भाजपा दोबारा सत्ता में आ गई है। वहीं सपा के नेता अब ईवीएम को दोष दे रहे हैं। कुशीनगर जिले के फाजिलनगर विधानसभा सीट से हारने वाले सपा प्रत्याशी स्वामी प्रसाद मौर्य ने ट्वीट कर ईवीएम और भाजपा पर निशाना साधा। उन्होंने लिखा कि बैलेट पेपर की वोटिंग में समाजवादी पार्टी 304 सीटों पर जीती है, जबकि भाजपा मात्र 99 पर।

किंतु ईवीएम की गिनती में भाजपा चुनाव जीती, इसका मतलब है कोई न कोई बड़ा खेल हुआ है। बता दें कि योगी सरकार में मंत्री रहे स्वामी प्रसाद ने सियासी रणनीति के तहत चुनाव से ठीक पहले न सिर्फ पार्टी बदली, बल्कि अपनी परंपरागत सीट पडरौना छोड़कर फाजिलनगर से चुनाव मैदान में उतरे। यहां उन्हें भाजपा के सुरेंद्र कुमार कुशवाहा ने पराजित किया। स्वामी ने चुनाव से पहले भाजपा छोड़ सपा का दामन थाम लिया था। वो 2007 से 2022 तक कुशीनगर जिले के अपने पारंपरिक सीट पडरौना से विधायक रहे हैं। 2016 में भाजपा में आने से पहले वो बसपा के साथ थे। स्वामी की हार में सपा के पूर्व जिलाध्यक्ष इलियास अंसारी का बागी होना मुख्य वजह माना जा रहा है। स्वामी के सहारे चुनावी वैतरणी पार करने वाले कई नेताओं को टिकट तो दिया गया, लेकिन नामांकन के बाद उन्हें मैदान से वापस होना पड़ा।

बाहर मत निकलना बेटा
बाहर जानवर घूम रहे हैं.

बामुलाहिजा
कार्टून: हसन जैदी

केशव प्रसाद मौर्य को मिलेगी बड़ी जिम्मेदारी

» पार्टी हाईकमान से लेकर संगठन तक डिप्टी सीएम को जिम्मेदारी के लिए मंथन शुरू

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सिराथू विधानसभा चुनाव में पराजय के बाद निवर्तमान डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के भविष्य को लेकर अटकलों का दौर शुरू हो गया है। 2017 के विधानसभा चुनाव में प्रदेश अध्यक्ष रहते पार्टी को प्रचंड जीत दिलाने वाले केशव प्रसाद मौर्य जहां सीएम पद की रेस में शामिल थे। वहीं पांच साल बाद 2022 में उनके लिए डिप्टी सीएम पद को लेकर भी असमंजस की स्थित उत्पन्न हो गई है। हालांकि उनके समर्थक और करीबी यह मानने के लिए तैयार नहीं हैं कि भाजपा केशव प्रसाद के मेहनत को नजर अंदाज करेगी।

भाजपाइयों को मानना है कि मौर्य को पुन: डिप्टी सीएम या कोई और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी जा सकती है। पार्टी हाईकमान से लेकर संगठन तक डिप्टी सीएम को जिम्मेदारी के लिए मंथन शुरू हो गया है। शीघ्र ही इसके बारे में कोई फैसला लिया जा सकता है। हालांकि सिराथू से हार के चलते कई सवाल भी उठने लगे हैं। विधान सभा चुनाव के दौरान सिराथू सीट पर केशव को भले ही पराजय का सामना करना पड़ा हो, लेकिन इस हार से उनका कद नहीं घटा है। समर्थक मान रहे हैं कि उन्हें फिर से बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। वहीं केशव के समर्थकों समेत भाजपाइयों ने उन्हें एक बार फिर से प्रदेश का डिप्टी सीएम बनाए जाने की मुहिम सोशल मीडिया के माध्यम से छेड़ दी है। केशव मौर्य को लेकर कहा जा रहा है कि वह भाजपा में पिछड़ी जाति के प्रदेश के सबसे बड़े चेहरे हैं। वर्ष 2017 में उनके प्रदेश अध्यक्ष रहने के दौरान ही भाजपा ने 300 से ज्यादा सीटें जीती। इसके पूर्व वर्ष 2014 में ही फूलपुर से सांसद का चुनाव केशव ने रिकार्ड मत से जीतकर वहां पहली बार कमल खिलाया था। इस बार भी विधानसभा चुनाव के दौरान डिप्टी सीएम ने प्रदेश के सभी जिलों में ताबड़तोड़ सभाएं कर भाजपा के पक्ष में माहौल बनाने का काम किया। इन्हीं सब वजहों से माना जा रहा है कि पार्टी उनकी अनदेखी नहीं करेगी।

टिकट बेचने का आरोप अत्यधिक गंभीर : रावत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तराखंड में हार के बाद कांग्रेस में हाहाकार मचा हुआ है। कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष रणजीत रावत की ओर से टिकट बेचने के आरोप लगाए जाने से आहत पूर्व सीएम हरीश रावत ने सोशल मीडिया के जरिए अपना दर्द जाहिर किया है। हरीश रावत ने कहा कि वह भगवान से प्रार्थना करते हैं कि कांग्रेस उन्हें निकाल दे। उन्होंने यह भी कहा कि होलिका दहन में हरीश रावत रूपी बुराई का भी कांग्रेस को दहन कर देना चाहिए?। कार्यकारी अध्यक्ष रणजीत रावत द्वारा टिकट बेचने के आरोप पर पूर्व सीएम ने कहा कि भगवान करे कांग्रेस मुझे निष्कासित कर दे। रावत ने कहा कि पद और पार्टी टिकट बेचने का आरोप अत्यधिक गंभीर हैं। और यदि वह आरोप एक ऐसे व्यक्ति पर लगाया जा रहा हो, जो मुख्यमंत्री रहा है। जो पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष रहा है। जो पार्टी का महासचिव रहा है और कांग्रेस कार्यसमिति का सदस्य है। आरोप लगाने वाला व्यक्ति भी गंभीर पद पर विद्यमान व्यक्ति हो।

यूपी में खड़े होने के लिए कांग्रेस को बड़ी सर्जरी की जरूरत

» हार से पार्टी में नीचे तक नाराजगी, इस्तीफों का दौर शुरू

» यूपी विधान सभा में कांग्रेस की अब तक की सबसे खराब स्थिति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी में खड़े होने के लिए कांग्रेस को अब बड़ी सर्जरी की जरूरत है। पारंपरिक तौर से की जाने वाली समीक्षाओं से काम चलने वाला नहीं है। विधान सभा चुनाव में टिकट देने में जिस तरह के प्रयोग हुए, वे कई सवाल छोड़ गए हैं। करारी हार से पार्टी में नीचे तक नाराजगी दिख रही है। उधर, पदाधिकारियों के इस्तीफा देने का सिलसिला भी शुरू हो गया है। कांग्रेस यूपी विधान सभा में अब तक की सबसे खराब स्थिति में है। उसके हिस्से में सिर्फ दो सीटें ही आईं।

पार्टी के महज चार प्रत्याशी ही पूरे प्रदेश में दूसरे स्थान पर रहे। ये विधानसभा क्षेत्र हैं– जगदीशपुर, खैरागढ़, किदवई नगर और मथुरा। मथुरा में कांग्रेस दूसरे नंबर पर जरूर रही पर हार–जीत का अंतर एक लाख से ज्यादा का रहा। कांग्रेस के ही एक नेता कहते हैं कि प्रयोग के तौर पर निजामाबाद से पार्टी के भीतर ही चर्चित टीम के खास माने जाने वाले अनिल यादव को टिकट दिया गया। वह कुछ समय पहले ही कांग्रेस से जुड़े थे। उन्हें प्रदेश कांग्रेस में संगठन सचिव सरीखा अहम पद भी दिया गया, लेकिन चुनाव में उन्हें सिर्फ 2,297 वोट मिले। इसी तरह उन्नाव में प्रयोग के तहत उतारे गए प्रत्याशी को महज 1,555 वोट मिले। यानी ये प्रत्याशी कांग्रेस के प्रदेश में मामूली मत प्रतिशत के बराबर भी वोट

नहीं पा सके। ऐसे में इस तरह के प्रयोगों का फैसला लेने वालों पर सर्जरी जरूरी है क्योंकि पार्टी के ही कई पुराने नेताओं ने उस वक्त भी इस पर एतराज जताया था। पार्टी की दुर्दशा पर लखनऊ, उन्नाव और बिजनौर आदि जिलों में पदाधिकारी इस्तीफा दे चुके हैं। यह सिलसिला आगे भी जारी रहने की उम्मीद जताई जा रही है। 90 के दशक से कांग्रेस से जुड़े एक नेता कहते हैं कि हम नए प्रयोगों के खिलाफ नहीं है। मगर ये फैसले एक टीम के तहत लिए जाने चाहिए। अगर बाहर से आए कुछ लोग मनमाने ढंग से फैसला लेंगे तो फिर इससे बेहतर नतीजों की उम्मीद नहीं की जानी चाहिए। यह नई ऊर्जा के साथ जुटने और नेतृत्व करने वाली टीम में बदलाव का वक्त है ताकि अगले दो साल कड़ी मेहनत से पार्टी लोक सभा चुनाव तक बेहतर स्थिति में आ सके।

पार्टी को इवेंट कंपनी के भरोसे छोड़ देने वालों पर विचार जरूरी

रुद्रपुर से कांग्रेस ने अपने पुराने नेता अखिलेश प्रताप सिंह को उतारा। उन्हें 30 हजार से ज्यादा मत मिले। इलाहाबाद उत्तरी से प्रत्याशी बनाए गए कांग्रेस के पुराने नेता अनुग्रह नारायण सिंह को 23 हजार से ज्यादा मत मिले। पुराने कांग्रेसियों का कहना है कि भले ही कांग्रेसी बैक ग्राउंड वाले प्रत्याशी जीत नहीं सके पर वे नहीं होते तो पार्टी के मत एक फीसदी से नीचे पहुंचने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता है। उनका कहना है कि पूरी पार्टी को अपने निष्ठावान कार्यकर्ताओं के बजाय इवेंट कंपनी के भरोसे छोड़ देने वालों के बारे में विचार करना भी जरूरी है।

प्रतिक्रिया पर निष्कासन उचित नहीं

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ओंकार नाथ सिंह ने इस बारे में सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार साझा किए हैं। उन्होंने लिखा है कि हार के बाद गुस्सा आना स्वाभाविक है और नेतृत्व को लोगों की बात सुननी चाहिए। क्या कारण थे, जिससे हमारी यह स्थिति हुई। हमें केवल ढाई प्रतिशत ही वोट मिले, जबकि बसपा को एक सीट ही मिली पर वोट उसको 12 प्रतिशत मिले। ओंकार आगे लिखते हैं कि हम अपनी पीड़ा नेतृत्व से नही कहेंगे तो किससे करेंगे। नेतृत्व का भी इतनी जल्दी किसी भी प्रतिक्रिया पर किसी को भी पार्टी से निष्कासित करना उचित नहीं है। उसे लोगों के असंतोष को भी सुनना चाहिए।

पार्टी कार्यकर्ताओं की इच्छा, प्रियंका गांधी लखनऊ आकर करें हार की समीक्षा

विधान सभा चुनाव के इतिहास में पार्टी के सबसे निराशाजनक प्रदर्शन के बाद प्रदेश कांग्रेस के कार्यकर्ता हार के कारणों की समीक्षा की मांग कर रहे हैं। यद्यपि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने नई दिल्ली में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक बुलाई है लेकिन कार्यकर्ताओं का कहना है कि पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा को लखनऊ आकर अलग से हार की समीक्षा करनी चाहिए और कांग्रेस से जुड़े कार्यकर्ताओं से भी फीडबैक लेना चाहिए। विधान सभा चुनाव के लिए टिकट वितरण में जिस तरह से कांग्रेस के पुराने कार्यकर्ताओं को नजरअंदाज कर पैराशूट से उतरे उम्मीदवारों पर पार्टी ने दांव लगाया, उससे कार्यकर्ताओं में भारी हताशा ही नहीं, कुंठा भी है। पार्टी के कई बड़े ओहदेदार अपने नातेदारों के चुनाव में ही व्यस्त रहे और दूसरे प्रत्याशियों के लिए जनसमर्थन जुटाने के लिए निकले ही नहीं। कार्यकर्ताओं को इस बात का भी रंज है कि पार्टी के प्रदेश नेतृत्व ने ऐसी शर्मनाक हार के लिए सार्वजनिक रूप से नैतिक जिम्मेदारी लेने से परहेज किया जबकि अतीत में कई उदाहरण ऐसे रहे हैं जब चुनावों में अपेक्षानुसार प्रदर्शन न कर पाने पर पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्षों ने इस्तीफा देने में तनिक भी देर नहीं की।

प्रदेश में तेजी से उभरी निषाद पार्टी, दिखाया अपना असर

» पार्टी मुखिया संजय निषाद सियासत के बने नए किरदार

» 15 में से 11 सीटों पर दर्ज की जीत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में भाजपा की सहयोगी निषाद पार्टी ने पहली बार अपनी धमक प्रदेश में दिखायी है। पार्टी 11 सीटों पर जीत दर्ज कर प्रदेश की चौथी बड़ी पार्टी बन गयी है। इसने संजय निषाद के इस दावे को साबित कर दिया कि निषाद वोटरों में उनकी पैठ है।

पूर्वांचल के गोरखपुर शहर से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की प्रैक्टिस और उसकी मान्यता के लिए संघर्ष कर अपनी नेतृत्व क्षमता का अहसास करवाने वाले डॉ. संजय निषाद विधान सभा चुनाव के बाद यूपी की राजनीति का अहम किरदार बन गए हैं। निषादों को अनुसूचित जाति का आरक्षण दिलवाने की मांग करने वाली निषाद पार्टी यूपी की चौथे नंबर की पार्टी बन गई है। 2022 के विधानसभा चुनाव

में भाजपा ने निषाद पार्टी को गठबंधन के तहत 15 सीटें दीं, जिनमें 11 सीटों पर जीत मिली। हालांकि, इन 11 में पांच सीटों पर निषाद पार्टी के नेता भाजपा के सिंबल पर चुनाव लड़े थे। इनमें डॉ. संजय निषाद के छोटे बेटे सरवन निषाद भी थे, जो चौरी–चौरा सीट से जीतकर विधान सभा पहुंचे हैं। 2017 के विधान सभा चुनाव में पहली बार निषाद पार्टी ने पीस पार्टी के साथ समझौता कर चुनाव लड़ा था। गठबंधन के तहत निषाद पार्टी ने 72 सीटों पर प्रत्याशी उतारे थे लेकिन, जीत सिर्फ ज्ञानपुर सीट पर विजय मिश्रा के रूप में मिली। इस चुनाव में डॉ. संजय निषाद खुद भी गोरखपुर देहात से हार गए थे। उन्हें सिर्फ 34,869 वोट मिले। 2017 में योगी को प्रदेश की कमान मिली। सीएम बनने के बाद उन्होंने गोरखपुर लोक सभा सीट से इस्तीफा दे दिया। गोरखपुर सीट पर हुए उप चुनाव में संजय निषाद ने सपा से गठबंधन कर अपने पुत्र प्रवीण निषाद को चुनाव लड़ाया और भाजपा को हराकर बेटे को संसद पहुंचा दिया था।

भाजपा ने दिलाई पहचान

गोरखपुर जैसी सीट लोकसभा उपचुनाव में हारने के बाद भाजपा ने निषाद पार्टी को अपने साथ लाने की कवायद शुरू की। 2019 के लोक सभा चुनाव में भाजपा ने निषाद पार्टी के साथ गठबंधन कर प्रवीण निषाद को संत कबीरनगर से संसद भेजा। साथ ही भाजपा ने डॉ. संजय निषाद को विधान परिषद पहुंचाया। 2022 के विधान सभा चुनाव में भाजपा ने निषाद पार्टी को गठबंधन के तहत 15 सीटें दीं, जिनमें 11 सीटों पर जीत मिली। हालांकि, इन 11 में पांच सीटों पर निषाद पार्टी के नेता भाजपा के सिंबल पर चुनाव लड़े थे। इनमें डॉ. संजय निषाद के छोटे बेटे सरवन निषाद भी थे, जो चौरी–चौरा सीट से जीतकर विधानसभा पहुंचे हैं।

160 क्षेत्रों पर प्रभाव का दावा

खुद को निषादों का बड़ा नेता बताने वाले निषाद पार्टी के अध्यक्ष डॉक्टर संजय निषाद की बात करें तो भाजपा ने उन्हे गठबंधन में 16 सीटें दी हैं। निषाद जाति का नेतृत्व करने वाले संजय निषाद का दावा है कि यूपी की 403 सीटों में से 160 पर निषादों का प्रभाव है। 2017 में निषाद पार्टी ने अपने सिंबल पर 72 उम्मीदवार उतारे थे लेकिन सिर्फ ज्ञानपुर सीट पर ही जीत मिली थी।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

त्योहार से पहले महंगाई बेलगाम

रंगों के पर्व होली से पहले देश में महंगाई बेलगाम हो गयी है। थोक महंगाई दर में लगातार इजाफा हो रहा है। लगातार 11वें महीने भी थोक महंगाई दर में वृद्धि जारी रही। खाद्य सामग्री से लेकर अन्य वस्तुओं के दामों में उछाल आया है। रही सही कसर कोरोना के कारण बढ़ी बेरोजगारी ने निकाल दी है। इसका सीधा असर आम आदमी की क्रय शक्ति पर पड़ा है। क्रय शक्ति में कमी आने के कारण बाजार में पूंजी प्रवाह पर भी असर दिखने लगा है। त्योहार में भी बाजार सूने पड़े हैं। सबसे अधिक मार गरीबों पर पड़ रही है। सवाल यह है कि महंगाई पर नियंत्रण के लिए सरकार कोई ठोस कदम क्यों नहीं उठा रही है? क्या कंपनियों को मनमानी करने की छूट दी जा सकती है? क्या पेट्रोल-डीजल की बढ़ी कीमतों ने महंगाई में इजाफा करने का काम किया है? क्या आम आदमी को महंगाई से निजात दिलाना सरकार का दायित्व नहीं है? क्या जनता की क्रय शक्ति को बढ़ाए बिना महंगाई से निपटा जा सकता है? क्या इसका असर देश की अर्थव्यवस्था पर नहीं पड़ेगा।

होली से ठीक पहले जनता को महंगाई का झटका लगा है। सरकार के आंकड़े भी इसकी पुष्टि करते हैं। ताजा आंकड़ों के मुताबिक फरवरी में थोक महंगाई दर 13.11 फीसदी पर पहुंच गई है। लगातार 11वें माह महंगाई दर बढ़ी है। यूपी सहित पांच राज्यों में विधान सभा चुनाव खत्म होते ही दिल्ली-एनसीआर सहित कई शहरों में सीएनजी की कीमतों में 50 पैसे से लेकर एक रुपये तक की वृद्धि हुई है। वहीं तेल कंपनियों ने कॉमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम में इजाफा कर दिया है। इसके तहत 105 रुपये प्रति सिलेंडर का इजाफा किया गया है। दूध के दामों में दो रुपये प्रति लीटर का इजाफा हुआ है। वहीं मैगी की कीमतें 9 से 16 रुपये तक बढ़ा दी गयी हैं। मिल्क और कॉफी पाउडर की कीमतें भी बढ़ गयी हैं। यह स्थिति तब है जब कोरोना काल में लाखों लोग बेरोजगार हो चुके हैं और उनके सामने रोजी-रोटी का संकट है। रोजगार के नए साधनों के अभाव के कारण आम आदमी की आर्थिक हालत खस्ता हो चुकी है। ऐसे में बाजार में पूंजी का प्रवाह कम हो रहा है। इसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। जाहिर है सरकार को महंगाई पर जल्द नियंत्रण लगाने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे। महंगाई पर तभी नियंत्रण लग सकता है जब सरकार एक ओर रोजगार के नए साधनों का सृजन करे तो दूसरी ओर वस्तुओं के बढ़ते मूल्यों पर नियंत्रण स्थापित करे। इसके लिए मनमानी तरीके से दाम बढ़ा रही कंपनियों पर भी लगाम लगाना होगा। यदि लोगों की क्रय शक्ति नहीं बढ़ी तो महंगाई को रोकना संभव नहीं होगा।

होली से ठीक पहले जनता को महंगाई का झटका लगा है। सरकार के आंकड़े भी इसकी पुष्टि करते हैं। ताजा आंकड़ों के मुताबिक फरवरी में थोक महंगाई दर 13.11 फीसदी पर पहुंच गई है। लगातार 11वें माह महंगाई दर बढ़ी है। यूपी सहित पांच राज्यों में विधान सभा चुनाव खत्म होते ही दिल्ली-एनसीआर सहित कई शहरों में सीएनजी की कीमतों में 50 पैसे से लेकर एक रुपये तक की वृद्धि हुई है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

चुनाव नतीजों के सियासी मायने

कमलेश पांडेय

भारत के पांच राज्यों में हुए विधान सभा चुनावों के आये नतीजों के सियासी मायने स्पष्ट हैं। कुछ अर्थों में ये बीजेपी और आम आदमी पार्टी यानी आप के लिए बेहद खास हैं। बीजेपी जहां चार राज्यों में अपनी सरकार बचाने में सफल रही है। वहीं आप ने दिल्ली के बाद पंजाब जैसे बड़े राज्य को कांग्रेस से छीन लिया। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में बीजेपी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हो गया है। मणिपुर में बिहार में सत्तारूढ़ जनता दल यू ने भी अच्छा प्रदर्शन किया है। वहीं इन चुनावों ने सपा, बीएसपी और कांग्रेस समेत अन्य दलों को भी कुछ सीख दी है यानी इन पार्टियों को अपनी घिसी पिटी सियासी रणनीति में आमूलचूल बदलाव लाना होगा अन्यथा बीजेपी से बची राजनैतिक जगह को आप भर देगी और गैर भाजपा विपक्ष दिल्ली-पंजाब की तरह हाथ मलता रह जायेगा।

आम चुनाव 2024 के पहले यूपी समेत पांच विधान सभा चुनाव 2022 को सेमीफाइनल करार देने वाले लोगों के लिए भी इसमें बहुत बड़ा संदेश छिपा हुआ है। उत्तर प्रदेश और पंजाब जैसे दो बड़े राज्यों और उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर जैसे तीन छोटे राज्यों से आये चुनाव परिणामों ने एक बार फिर से यह बात स्थापित करने की कोशिश की है कि भारतीय राजनीति की परंपरागत चुनावी धारा बदल रही है और उसकी जगह एक नई धारा ले रही है, जो जातिवाद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद, परिवारवाद, पूंजीवाद, बाहुबल, तुष्टिकरण जैसे पुराने राजनैतिक दांवपेंच से इतर सुशासन, विकासवाद, हिंदुत्व और संतुलित समीकरण को साधकर मूल्यों व वसूलों की राजनीति को बढ़ावा देने तथा सबको समान अवसर, सत्तागत सहूलियत व जनसुविधाएं देने की कोशिशों पर आधारित है। यही वजह है कि कुछेक अपवादों को छोड़कर बीजेपी लगातार आगे बढ़ रही है और सात-आठ साल पहले गठित आम आदमी पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी सवा सौ साल पुरानी पार्टी की जगह धीरे-धीरे ले रही है। वैसे भाजपा के विरोधी दलों ने कोरोना महामारी के बाद भूख, गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी, पेट्रोल-गैस की बढ़ती कीमतों आदि मुद्दों को गरमाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। परन्तु ताजा चुनाव परिणाम ने साबित कर दिया कि पांच राज्यों में जातिवादी, परिवारवादी, भ्रष्टाचारी तथा छद्म सेक्युलरवादी दलों को मतदाताओं ने खारिज कर दिया है और हिंदूवादी ताकतों के हाथों में सत्ता सौंप दी है, अपवाद स्वरूप पंजाब को छोड़कर, जहां आप की राजनीति कई मामलों में बीजेपी की नकल ही करार

दी जाती है। वहीं, पंजाब में कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्धू, उप्र में सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य तथा उत्तराखंड में कांग्रेस नेता हरीश रावत की पराजय बहुत कुछ कर रही है।

सच कहा जाए तो उत्तर प्रदेश में 1985 की कांग्रेस सरकार के बाद बीजेपी की योगी सरकार ही ऐसी सरकार है जो फिर से सत्ता में अपनी वापसी कर रही है। लगभग 37 साल बाद बन रहे इस रिकॉर्ड के पीछे कई कारण हैं। राजनीतिक विश्लेषकों की मानें तो सीएम योगी आदित्यनाथ सत्ता में फिर से अपनी वापसी के लिए आत्मविश्वास से लबरेज रहे क्योंकि उन्होंने सुशासन और विकास के अलावा जनता की हर छोटी बड़ी तकलीफ को समझकर उसे ईमानदारी पूर्वक दूर करने की कोशिश की और अपने अधिकारियों के ऊपर भी सतत निगरानी रखे। उन्होंने केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को ईमानदारी से लागू करवाया। वहीं, कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से निपटने के लिए सरकार की ओर से सबको कोरोना की मुफ्त वैक्सीन व समुचित इलाज के प्रयत्न भी प्रमुख कारण है, जिसे लोगों ने महसूस किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा कानून व्यवस्था का सफल क्रियान्वयन और बाहुबलियों-भ्रष्टाचारियों के खिलाफ सख्ती भी प्रमुख रहा है। भाजपा ने अपनी युगान्तकारी नीतियों से सभी सामाजिक वर्गों के बीच संपर्क का सघन अभियान चलाया। उसने महिलाओं, युवाओं के साथ सभी सामाजिक वर्गों व जातियों के बीच अपनी पैठ और गहरी की, जिसका सकारात्मक नतीजा यह हुआ कि भाजपा को सभी वर्गों का वोट मिला। पीएम मोदी और योगी सरकार ने राजनीति में परिवारवाद और गुंडागर्दी को मुख्य मुद्दा बनाया गया। सपा ने अच्छी लड़ाई लड़ी। उत्तराखंड में तीन-तीन मुख्यमंत्री बदलने के बावजूद भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिलना जाहिर करता है कि पार्टी रणनीतिकारों के प्रयोग सफल रहे हैं। वहीं, गोवा में बीजेपी को बहुमत मिलना यह साबित करता है कि यहां बीजेपी का सियासी अंदाज लोगों को पसंद है। मणिपुर में भी बीजेपी को बहुमत मिला है। पंजाब में कांग्रेस का अंतर्कलह उसे ले डूबा। और बीजेपी की पुरानी सहयोगी पार्टी अकाली दल बादल द्वारा बीजेपी का साथ छो?ना उसकी सत्ता में फिर से वापसी पर विराम लगा दिया। यहां आप उभरकर सामने आयी है।

नाटो को लेकर रूस की चिंता

शिवकांत

रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने फरवरी, 2007 के म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में अमेरिका व नाटो पर तीखा प्रहार करते हुए कहा था कि पश्चिमी देशों ने पूर्वी यूरोप में नाटो का विस्तार न करने के अपने 1990 के वादे से मुकर कर रूस को धोखा दिया है। इस आरोप को वे कई बार दोहरा चुके हैं। इसी को उन्होंने यूक्रेन पर हमला करने का औचित्य भी बनाया है। यही शिकायत सोवियत संघ के अंतिम राष्ट्रपति गोर्बाचेव और रूस के पहले के राष्ट्रपति येल्त्सिन की भी रही है, पर नाटो इसका खंडन करता है। रूस और अमेरिका द्वारा जारी एकीकरण वार्ताओं के दस्तावेज में कहीं भी ऐसे वादे का जिक्र नहीं मिलता। इसकी वजह स्पष्ट है। एकीकरण की वार्ताएं नवंबर, 1989 से सितंबर, 1990 तक चली थीं जबकि सोवियत संघ और वारसा गुट के बिखराव की प्रक्रिया मार्च, 1991 में शुरू हुई थी। सोवियत संघ और वारसा गुट के मौजूद रहते हुए पूर्वी यूरोप में नाटो के विस्तार की बात होने का कोई मतलब ही नहीं था।

ऐसा लगता है कि या तो अमेरिका और नाटो ने अनौपचारिक रूप से विस्तार न करने का आश्वासन दिया होगा या रूसी नेताओं को लगा कि सोवियत संघ और वारसा गुट के न रहने के बाद नाटो का विस्तार नहीं होगा क्योंकि उसकी जरूरत ही नहीं रहेगी, पर ऐसा हुआ नहीं। सोवियत गुलामी से आजाद हुए देशों के पास न सैन्य शक्ति थी और न ही आर्थिक शक्ति, लेकिन रूस महाशक्ति के रूप में मौजूद था इसलिए हंगरी, चैकोस्लोवाकिया और पोलैंड ने 1991 से ही नाटो के सुरक्षा कवच में शामिल होने के प्रयास शुरू कर दिये थे। यूरोप में कुछ लोग नाटो की जरूरत पर सवाल उठाने और उसे भंग करने की बातें कर रहे थे तो दूसरी तरफ रूसी नेता रूस को भी नाटो में शामिल करने की बातें कर रहे थे। सामरिक दृष्टि से देखें तो वारसा गुट भंग होने के बाद नाटो के बिना यूरोप की हालत सर्कस के ऐसे रिंग जैसी हो सकती थी, जिसमें बिल्ली के आकार के यूरोपीय देशों के सामने रूस जैसा दैत्याकार शेर खड़ा हो।

रूस की चिंता को दूर करने और रूस व नाटो देशों के बीच विश्वास और सुरक्षा का माहौल बनाने के लिए मई, 1997 में एक नाटो-रूस आधारशिला समझौता हुआ। इसके दो साल बाद नाटो ने सालों चली माथापच्ची के बाद मार्च, 1999 में चेक गणराज्य, हंगरी और पोलैंड को सदस्य बना लिया। इस घटना पर गोर्बाचेव ने कहा था, 'पश्चिम के वे लोग इसे जीत मान कर खुश हो रहे हैं, जिन्होंने हमसे वादा किया था कि पूर्व की ओर एक इंच भी आगे नहीं बढ़ेंगे।' पर अक्टूबर, 2014 में 'कमिरसांत' अखबार के साथ इंटरव्यू में उन्होंने यह भी माना कि 'नाटो के विस्तार का विषय 1989 और 1990 की वार्ताओं में कभी उठाया ही नहीं गया, 1991 में वारसा गुट के भंग हो जाने के बाद भी नहीं।'

इन बातों से लगता है कि नाटो ने औपचारिक रूप से यह वादा नहीं किया कि वह खुले दरवाजे की अपनी नीति छोड़ देगा और पूर्वी यूरोप के देशों को सदस्यता नहीं देगा लेकिन रूसी नेताओं की जर्मनी के एकीकरण के बाद से ही यह धारणा रही है कि उन्हें ऐसा आभास दिलाया गया था। राष्ट्रपति बनने के बाद पुतिन ने इसी शिकायत को रूस की सुरक्षा का प्रश्न बना लिया पर सामरिक शक्ति संतुलन पर नजर डालें तो रूस नाटो देशों की तुलना में कहीं से उन्नीस नहीं बैठता। सुरक्षा और अस्तित्व का असल खतरा तो नाटो के यूरोपीय सदस्यों को है, जिनमें हंगरी और चेकोस्लोवाकिया जैसे देश अतीत में सोवियत रूस के हमले झेल चुके हैं। रूस ने मालदोवा के ट्रांसनिस्ट्रिया पर 1992 से कब्जा कर रखा है। साल 2008 में जॉर्जिया पर हमला कर उसके दो प्रांतों में कठपुतली सरकारें बना रखी हैं। इसी तरह 2014 से यूक्रेन के दक्षिणी प्रायद्वीप क्रीमिया पर उसका कब्जा है और पूर्वी प्रांत डॉनबास में दो कठपुतली राज्य बना रखे हैं।

साल 1994 के परमाणु निरस्त्रीकरण समझौते में दी गयी सुरक्षा की गारंटी के बदले यूक्रेन से सारे परमाणु हथियार लेकर अब वह यूक्रेन के सैनिक, राजनीतिक और बुनियादी ढांचे को ध्वस्त कर रहा है। रूस से तो डर यूरोप के नाटो देशों को लगना चाहिए। नाटो का कहना है कि वह देशों की सुरक्षा का संगठन है, ठीक उसी तरह, जैसे व्यापार में अमेरिका का मुकाबला करने के लिए यूरोपीय देशों ने व्यापार संघ बनाया है। यूरोपीय संघ को अपनी व्यापारिक सुरक्षा का प्रश्न बना कर अमेरिका ने तो उस पर हमला नहीं किया। इसी तरह यूरोप के छोटे-छोटे देशों को सुरक्षा कवच देने के लिए नाटो बनाया गया था तो फिर समस्या की जड़ क्या है?

साम्यवादी अर्थव्यवस्था के पतन के साथ रूस आर्थिक लड़ाई तो हार चुका है। वहां भी नाटो देशों की तरह ही पूंजीवादी बाजार व्यवस्था है. केवल राजनीतिक व्यवस्था और पारदर्शिता का फर्क बचा है। यूरोपीय संघ और नाटो की सदस्यता उन्हीं देशों को दी जाती है, जहां लोकशाही और पारदर्शिता हो। पुतिन को लोकशाही में अराजकता और अपनी सत्ता के लिए चुनौती नजर आती है। यही हाल शी जिनपिंग का है. यह लड़ाई सामरिक सुरक्षा की नहीं है। यह लड़ाई लोकशाही और तानाशाही की है।

होलिका दहन

से पहले इन बातों का रखें ख्याल

होली का त्यौहार आने में कुछ ही दिन बाकी हैं। होली का पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। इस दिन होलिका दहन किया जाता है। वहीं इसके अगले दिन चैत्र मास की प्रतिपदा तिथि को रंग वाली होली खेली जाती है। इस साल होलिका दहन 17 मार्च 2022 को किया जाएगा। जबकि रंग वाली होली 18 मार्च 2022 को खेली जाएगी। होली से पहले होलिका जलाई जाती है। ऐसे में होलिका दहन की पूजा करते समय कुछ बातों का ख्याल रखना काफी जरूरी होता है। तो आइए जानते हैं होलिका दहन की पूजा का मुहूर्त और इस दौरान किन लोगों को सावधानी बरतनी चाहिए। होली का उत्सव धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से काफी महत्व रखता है। इसमें होलिका, ढुण्डा, प्रहलाद और स्मर शांति तो है ही, इनके अलावा इस दिन 'नवान्नेष्टि यज्ञ' भी संपन्न होता है।

होलिका दहन पूजन शुभ मुहूर्त

- **होलिका दहन**- 17 मार्च 2022 को
- **होलिका दहन का मुहूर्त**- शाम 9 बजकर 6 मिनट से 10 बजकर 16 मिनट तक
- **होलिका दहन पूजन का समय**- 01 घण्टा 10 मिनट्स
- **भद्रा पूंछ**- रात 09 बजकर 06 मिनट से 10 बजकर 16 मिनट तक
- **भद्रा मुख**-10 बजकर 16 मिनट से 12 बजकर 13 मार्च 18 तक

इन लोगों को नहीं देखनी चाहिए जलती हुई होलिका

ज्योतिषाचार्य संतोष शास्त्री ने बताया कि नवविवाहित स्त्रियों को होलिका की जलती हुई अग्नि को नहीं देखना चाहिए। इसके पीछे कारण है कि होलिका की अग्नि को लेकर माना जाता है कि आप पुराने साल को जला रहे हैं। यानी पुराने साल के शरीर को जला रहे हैं। होलिका की अग्नि को जलते हुए शरीर का प्रतीक माना जाता है। इसीलिए जिन महिलाओं की इस दौरान शादी हुई हो या नवविवाहित कन्याओं और स्त्रियों को होलिका की जलती हुई अग्नि को देखने से बचना चाहिए।

गूलर का महत्व

होलिका दहन वाले दिन लोग गाजे-बाजे के साथ गांव के बाहर से गूलर वृक्ष की शाखा लाते हैं और उसकी गंधादि से पूजा कर गांव के बाहर पश्चिम दिशा में लगा देते हैं। आम भाषा में इसे होली दण्ड के नाम से जाना जाता है, लेकिन वास्तव में यह 'नवान्नेष्टि यज्ञ' का स्तंभ है। गूलर का फल माधुर्य गुण की दृष्टि से सर्वोपरि माना जाता है।

होलिका दहन पूजा विधि

फाल्गुन मास की शुक्ल पूर्णिमा की सुबह स्नान कर होलिका व्रत का संकल्प करें। बच्चों को लकड़ी की तलवार बनाकर दें, उन्हें उत्साही सैनिक बनाएं। दोपहर बाद होलिका दहन के स्थान को पवित्र जल से धोकर या वहां जल का छिड़काव कर उसे शुद्ध कर लें। वहां लकड़ी, सूखे उपले और सूखे कांटे भलि-भांति स्थापित करें। शाम में होली के समीप जाकर फूल-गन्धादि से पूजन करें। इसके बाद इसे जलाएं और चैतन्य होने पर 'असरकृपा भयसंत्रस्तैः कृत्वा त्वं होलिबालिशैः अतस्त्वां पूजयिष्यामी भूते भुति प्रदा भवः' इस मंत्र से प्रार्थना करके तीन परिक्रमा लगाएं और अर्घ दें।

इन चीजों को होलिका में डालने से दूर होंगी बीमारियां

- होलिका दहन के दिन कुछ उपायों को करने से आपको अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त हो सकता है। इसके लिए दाहिने हाथ में काले तिल के दाने लेकर मुट्ठी बना लें। फिर अपने सिर पर से 3 बार घुमाकर होलिका की अग्नि में डाल दें। ऐसा करने से आपको अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी।
- अगर आप समय-समय पर बीमार होते रहते हैं तो इस दिन 11 हरी इलायची और कपूर को आपको होलिका की अग्नि में डालना चाहिए है यह काफी शुभ होगा इससे बीमारी से मुक्ति मिलेगी।
- धन संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए चंदन की लकड़ी आपको होलिका की अग्नि में डालनी चाहिए। इसे दोनों हाथों से होलिका की अग्नि में डालें और प्रणाम करें। इससे धन संबंधी मुश्किलें दूर हो जाएंगी।
- अगर आपको नौकरी नहीं मिल रही है या कारोबार में दिक्कतें चल रही हैं तो इसके लिए एक मुट्ठी पीली सरसों

लें। इसे अपने सिर पर से 5 बार घुमा लें और होलिका की अग्नि में डालें। यह आपके लिए काफी शुभ साबित होगा।
- अगर आपके विवाह में देरी या बाधा आ रही हैं तो बाजार से हवन सामग्री लाएं। इसमें घी मिक्स करें और अपने दोनों हाथों से होलिका की अग्नि में डालें। इससे विवाह में आने वाली दिक्कतें दूर हो जाएंगी।

हंसना मना है

शौंटी: समोसे को खोलकर अंदर का मसाला ही खा रहा था। संजू: अरे! तू पूरा समोसा क्यों नहीं खा रहा? शौंटी: अरे मैं बीमार हूं न... इसलिए डॉक्टर ने बाहर की चीज खाने से मना किया है।

टीचर: संजू एक स्टोरी सुनाओ विद मॉरल मंटू: मैंने उसको फोन किया वो सो रही थी.. फिर उसने मुझे फोन किया मैं सो रहा था। मॉरल: जैसी करनी वैसी भरनी।

बब्लू: पड़ोसन की डेथ कैसे हुई? डब्लू: दाल के भाव बहुत बढ़ने से। बब्लू: ओए, पागल हो गए हो क्या? ऐसे कैसे हो सकता है? डब्लू: मैंने अपनी आंखों से उसका डेथ सर्टिफिकेट देखा था, उस पे लिखा था Death due to High Pulse Rate बब्लू का घूम गया सिर।

डॉक्टर: अब आप खतरे से बाहर हैं, फिर भी आप इतना डर क्यों रहे हैं। मरीज: जिस ट्रक से मेरा दुर्घटना हुआ था उसपे लिखा था कि 'जिंदगी रही तो फिर मिलेंगे'

पति: मैं तुमको तुम्हारे जन्मदिन पर सुंदर उपहार देना चाहता हूं। सामने दुकान पर लटकी साड़ी का रंग कैसा लग रहा है? पत्नी (खुश होकर): बहुत सुंदर है। पति: बस, बिल्कुल इसी रंग का रुमाल मैंने तुम्हारे लिए लिया है। पत्नी ने तुरंत डिवोर्स लॉयर को फोन मिला दिया..

कहानी | ब्राह्मण किसकी पूजा करे

एक दिन महाराज कृष्णदेव राय ने कहा सभी दरबारी तथा मंत्रीगणों को यह आभास तो हो ही गया होगा कि आज दरबार में कोई विशेष कार्य नहीं और ईश्वर की कृपा से किसी की कोई समस्या भी हमारे सम्मुख नहीं। अतः क्यों न किसी विषय पर चर्चा की जाए। क्या आप जैसे योग्य मंत्रियों व दरबारियों में से कोई सुझा सकता है ऐसा विषय, जिस पर चर्चा कराई जा सके। तभी तेनालीराम बोला कि महाराज, विषय का निर्णय आप ही करें तो अच्छा होगा। महाराज ने कुछ सोचा और फिर बोले कि जैसा कि आप सभी जानते हैं कि क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र-तीनों वर्ग ब्राह्मण को पूजनीय मानें? सभी दरबारियों व मन्त्रियों को महाराज का यह प्रश्न बेहद सरल प्रतीत हुआ। इसमें कठिनाई क्या है महाराज ? ब्राह्मण गाय को पवित्र मानते हैं... गाय जो कामधेनु का प्रतीक है। एक मंत्री ने उत्तर दिया। दरबार में उपस्थित सभी लोग उससे सहमत लगे। तभी महाराज बोले तेनालीराम, क्या तुम भी इस उत्तर से संतुष्ट हो या तुम्हारी कुछ अगल राय है। तेनालीराम हाथ जोड़ते हुए विनम्र भाव से बोला, ''महाराज ! गाय को तो सभी पवित्र मानते हैं, चाहे मानव हो या देवता। और ऐसा मानने वाला मैं अकेला नहीं, हमारे विद्वान की राय भी कुछ ऐसी ही है। यदि ऐसा है तो ब्राह्मण गौ-चर्म (गाय की खाल) से बने जूते-चप्पल क्यों पहनते हैं ? महाराज ने फिर पूछा। दरबार में चहुं ओर चुप्पी छा गई। दरअसल महाराज ने जो कुछ भी कहा था, वह बिल्कुल सच था। इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास न था। सबको चुप देख महाराज ने घोषणा की जो भी उनके इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर देगा, उसे एक हजार स्वर्ण मुद्राएं पुरस्कार स्वरूप दी जाएंगी। हजार स्वर्ण मुद्राओं का पुरस्कार दरबार में उपस्थित हर कोई लेना चाहता था लेकिन प्रश्न का उत्तर कोई नहीं जानता था। सभी को चुप बैठा देख तेनालीराम अपने आसन से उठते हुए बोला महाराज ! ब्राह्मण के चरण (पैर) बेहद पवित्र माने जाते हैं। उतने ही पवित्र, जितना कि किसी तीर्थ धाम की यात्रा। अतः गौ-चर्म से बने जूते-चप्पल पहनने से गायों को मोक्ष मिल जाता है। गलत तो हर हाल में गलत है। महाराज बोले, ''गौ-चर्म से बने जूते-चप्पल पहनना जायज नहीं कहा जा सकता, फिर चाहे पहनने वाला ब्राह्मण हो या किसी अन्य वर्ग का। लेकिन मुझे खुशी इस बात की है कि तेनालीराम ने उत्तर देने का साहस तो किया। चतुराई भरा उसका उत्तर उसे हजार स्वर्ण मुद्राएं दिलाने के लिए काफी है।

10 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

आज सिंगल लोगों की शादी तय हो सकती है। आज के दिन शुरू हुई रिलेशनशिप लंबे समय तक चलेगी। प्रेमी पर किसी तरह का दबाव ना डालें। पार्टनर को आज अपने दिल की बात बोल पाएंगे।

वृषभ

पति-पत्नी के बीच तालमेल बना रहेगा। खुद पर सयंम बरतें। आज आप सोच-समझकर बोलें। पार्टनर के साथ किसी यात्रा पर जा सकते हैं। ऑफिस में महिला मित्रों से सहयोग मिलेगा।

मिथुन

आज के दिन किसी को प्रपोज करने का मन बना रहे है तो आज के दिन आपके लिए अनुकूल होगा। पार्टनर के साथ मन मुटाव हो सकता है।

कर्क

आज आपकी लव लाइफ अच्छी रहेगी। पति-पत्नी के बीच प्यार बना रहेगा। आज के दिन पार्टनर की कमी महसूस करेंगे। मानसिक तनाव हो सकता है।

सिंह

पति-पत्नी के बीच तालमेल बना रहेगा। किसी से आपकी मुलाकात हो सकती है और वह आपका जीवनसाथी बन सकता है। आज के दिन आपके लिए अच्छा होगा।

कन्या

पति-पत्नी के बीच विवाद हो सकता है। आज के दिन शुरू हुई रिलेशनशिप ज्यादा समय तक नहीं चलेगी। पार्टनर के साथ हुए झगड़े से आज बोझिल महसूस करेंगे।

तुला

आज आपको पार्टनर से खुशखबरी मिल सकती है। शादी का प्रपोजल मिल सकता है। पार्टनर को समय नहीं देने से वह नाराज हो सकता है। पार्टनर से उपहार मिल सकता है।

वृश्चिक

पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव हो सकता है। आज पार्टनर से मुलाकात होगी लेकिन बाहर घूमने का प्लान नहीं बन पाएगा। शादी के लिए प्रपोजल मिल सकते हैं।

धनु

आज आपको जीवनसाथी मिल सकता है। लव लाइफ में किसी तरह का डर नहीं रहेगा। प्रेम संबंध शुरू करने के लिए आज का दिन ठीक होगा।

मकर

दिन रोमांस से भरपूर रहेगा। आप अपने साथी की जरूरतों का खास ध्यान रखेंगे। प्रेमी के साथ बाहर घूमने जाएंगे। इस हफ्ते आप स्वार्थी भी हो सकते हैं।

कुम्भ

पति-पत्नी के बीच रिश्ते सामान्य रहेंगे। आज पार्टनर की कोई बात बुरी लग सकती है। इसलिए वाणी पर संयम रखें। पार्टनर को अपनी इच्छाओं से जीतने की कोशिश करें।

मीन

बांधने की कोशिश न करें। आज आपकी बातचीत से विपरित लिंग के लोग प्रभावित होंगे। प्रेम संबंधों का बनाए रखने के लिए कुछ बातें इग्नोर करनी पड़ेगी।

अगले महीने ओटीटी पर रिलीज होगी अभिषेक बच्चन की दसवीं

बॉलीवुड | मसाला

अभिषेक बच्चन और यामी गौतम की अपकमिंग फिल्म 'दसवीं काफी चर्चा में है। जहां पहले इस फिल्म के सिनेमाघरों में रिलीज होने का खबर थी। वहीं हाल ही जानकारी मिली कि मेकर्स इस फिल्म को थियेटर्स में रिलीज न करके बल्कि ओटीटी पर रिलीज करने का मन बना चुके हैं। जिसके बाद दो ओटीटी चैनल इस फिल्म को अपने प्लेटफॉर्म पर उतारने के लिए रेस में थे लेकिन खबरों के मुताबिक अब ये फिल्म 7 अप्रैल 2022 को ओटीटी के जियो सिनेमा और नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी ऐसे में इस फिल्म का दर्शक घर बैठ आनंद ले सकते हैं।

फिल्म दसवीं के जब कई पोस्टर लोगों के बीच आए तो इसमें सबसे ज्यादा चर्चा में रहा अभिषेक बच्चन का रफ एंड टफ लुक। बताया जा रहा है इस फिल्म में उनके किरदार का नाम गंगा चौधरी होगा। जो बेहद पावरफुल किरदार होगा। फिल्म में यामी गौतम, निमरत कौर के लुक्स को भी फैंस ने काफी पसंद किया है। यामी एक आईपीएस ऑफिसर बनी हैं जिनका नाम ज्योति देसवाल है।

वहीं फिल्म में निमरत कौर बिमला देवी नाम का कैरेक्टर कर रही हैं। दसवीं एक सोशल पॉलिटिकल कॉमेडी फिल्म है जिसे डायरेक्शन की दुनिया में कदम रखने वाले तुषार जलोटा ने डायरेक्ट किया है। इस फिल्म को जियो स्टूडियो और दिनेश विजान के मडोक प्रोडक्शन द्वारा बनाया गया है। देखना होगा कि जिस तरह से लोगों ने फिल्म की कास्ट के लुक्स को सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है वहीं क्या फिल्म भी दर्शकों की उम्मीद पर खरी उतरेगी?

नोरा फतेही डांस दीवाने जूनियर में लगाएंगी ग्लैमर का तड़का

बॉलीवुड | तड़का

दिलबर गर्ल नोरा फतेही के सिजलिंग अंदाज के साथ उनके किलर डांस मूव्स की भी दुनिया कायल है। नोरा फतेही जहां भी जाती हैं अपने शानदार डांस मूव्स से तहलका मचा देती है। डांस के लिए नोरा के पैशन को देखते हुए उन्हें एक डांस रियलिटी शो के जज के तौर पर चुना गया है। लेटेस्ट रिपोर्ट्स की मानें तो नोरा फतेही डांस दीवाने जूनियर का अपकमिंग सीजन जज करेंगी। नोरा फतेही ने अपकमिंग शो करने का फैसला कर लिया है। नोरा इससे पहले भी डांस रियलिटी शो को जज कर चुकी हैं। दरअसल मलाइका अरोड़ा के कोरोना संक्रमित होने पर नोरा फतेही ने उनकी जगह जज की कुर्सी संभाली थी। इसके अलावा नोरा फतेही डांस दीवाने शो में भी गेस्ट जज के तौर पर नजर आ चुकी हैं। दोनों ही डांस शो में नोरा को काफी पसंद किया गया था। रिपोर्ट्स के मुताबिक नोरा फतेही को डांस दीवाने जूनियर के अपकमिंग शो में जज के लिए चुन लिया गया है। इस खबर के सामने आने के बाद से एक्ट्रेस के फैंस की खुशी का ठिकाना नहीं है। नोरा हमेशा ही अपने फैंस के बीच पॉपुलर रही हैं। नोरा के डांस के साथ उनके सुपर सिजलिंग स्टाइल स्टेटमेंट पर भी फैंस फिदा रहते हैं। फैंस डांस दीवाने जूनियर में नोरा को जज की कुर्सी पर बैठे देखने के लिए बेकरार हैं। हमें यकीन हैं कि नोरा इस शो में भी अपने किलर डांस मूव्स और ग्लैमरस अवतार से एक बार फिर से फैंस को दीवाना बनाने वाली हैं। है ना ये मजेदार खबर!

बॉलीवुड | मन की बात

सायशा शिंदे का 10 साल की उम्र में हुआ था उत्पीड़न

कंगना रनोट के अत्याचारी खेल में एक सनसनीखेज खुलासा हुआ। शो में बॉटम तीन में पहुंच चुकीं कंटेस्टेंट सायशा शिंदे ने एक हैरान कर देने वाला खुलासा किया। सायशा शिंदे ने शो से बाहर होने से बचाने के लिए अपनी जिंदगी का एक दर्दनाक सीक्रेट दुनिया के सामने जाहिर किया, जिसे सुनकर सभी सन्न रह गए। बता दें कि सायशा शिंदे एक ट्रांसवूमन हैं, जो लड़के से लड़की बनीं हैं। शनिवार के एपिसोड में सायशा ने एक गहरे राज का खुलासा करते हुए बताया कि उनके परिवार के ही एक इंसान ने 10 साल की उम्र में उनके साथ छे?खानी की थी। जब कंगना ने सायशा से पूछा कि वह कौन इंसान थे, जिन्होंने उनके साथ ऐसी घिनौनी हरकत की। तब सायशा ने कंगना को जवाब देते हुए कहा कि वह उनका नाम नहीं लेना चाहतीं क्योंकि वह उनके परिवार का हिस्सा हैं। सायशा ने आगे कहा कि अब जब उन्होंने इस बात का खुलासा कर दिया है तो जाहिर सी बात है उस इंसान को भी इस बारे में पता चल जाएगा और वह बाहर जाकर खुद उस इंसान से बात करना चाहेंगी। दरअसल बचपन में जब उत्पीड़न का शिकार हुईं तो वो सायशा नहीं बल्कि स्वप्निल शिंदे थे। तब वो एक ल?का थे और उनके साथ छेड़खानी करने वाला उनसे सिर्फ कुछ साल बढ़ा था। यानी कानून की नजर में वह जेल में जाने की उम्र का नहीं था। इस खुलासे के बाद और शो से एलिमिनेट हो चुके तहसीन पूनावाला के सेव करने के बाद सायशा सुरक्षित हो गईं।

कौन थी हिटलर की महिला जासूस माता हारी जिसके डांस ने लोगों को बना दिया था दीवाना

माता हारी दुनिया की एक प्रसिद्ध जासूस थी। उसने अपनी जासूसी का पूरी दुनिया में लोहा मनवाया था। हिटलर की जासूस के तौर पर काम करने वाली माता हारी ने पूरे यूरोप को नचाने का काम किया था। माता हारी को हिटलर की जासूसी करने के आरोप में मार दिया गया था। वह जासूसी के साथ ही एक खूबसूरत डांसर भी थी। नीदरलैंड में साल 1876 में गेरत्रुद मार्गरेट जेले का जन्म हुआ था जो माता हारी के नाम से पूरी दुनिया में मशहूर थी। उसका असली काम जासूसी करना था। माता हारी के कई देशों के सैन्य अधिकारियों, मंत्रियों और राजशाही लोगों से नजदीकी रिश्ते थे। अपनी अदाओं के लिए मशहूर माता हारी साल 1905 में फ्रांस की राजधानी पेरिस गई थी। उसने अपने खास अंदाज की वजह से बहुत जल्दी ही लोकप्रिय हो गई थी। माता हारी के डांस ने लोगों को दीवाना बना दिया था और वह यूरोप में नृत्य करने के लिए जाने लगी। पहला विश्व युद्ध शुरू होने तक वह एक डांसर और स्ट्रिपर के तौर पर मशहूर हो गई थी। माता हारी का डांस देखने के लिए कई देशों से राजशाही लोग और बड़े सैन्य अधिकारी आते थे। उसने इसी मेलजोल का फायदा उठाया और गोपनीय जानकारियां एक से लेकर दूसरे पक्ष को देने लगी। बताया जाता है कि हिटलर और फ्रांस के लिए माता हारी जासूसी करती थी। माता हारी की मौत के बाद सत्तर के दशक में जर्मनी के गोपनीय दस्तावेज सामने आए। इन दस्तावेजों से खुलासा हुआ कि वह जर्मनी के लिए जासूसी का काम करती थी। जासूसी करने आरोप में साल 1917 में माता हारी को गिरफ्तार कर लिया गया था। लेकिन उसने कोर्ट में सुनवाई के दौरान कभी स्वीकार नहीं किया कि वह एक जासूस है। कोर्ट को उसने बताया था कि वह सिर्फ डांसर है। लेकिन उस पर जासूसी के आरोप सिद्ध हो गए। इसके बाद उसको आंखों पर पट्टी बांध कर गोली मारने की सजा दी गई। जानकर बताते हैं कि माता हारी नहीं बना जा सकता है सिर्फ पैदा होना पड़ता है। माता हारी को खूबसूरत नहीं होने के कारण एक डांस ग्रुप में शामिल नहीं किया गया था, जिसके बाद उसे एक सर्कस में काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा। माता हारी का पति नीदरलैंड की शाही सेना में एक अधिकारी था, लेकिन उसने उसको छोड़ दिया था। वह शराबी था और माताहारी को पीटता था। उसने भारतीय काम कला के रहस्यों को समझा जिसके बाद उसे माता हारी नाम मिला। उसके नए अवतार ने लोगों को दीवाना बना दिया था।

अजब-गजब | कई सालों से लगा है बैन

भारत के इस गांव में नहीं जा सकता कोई विदेशी

भारत में कई खूबसूरत जगहें हैं। जहां देश और विदेश से लाखों लोग हर साल आते हैं। इन खूबसूरत जगहों में देवभूमि उत्तराखंड का नाम सबसे ऊपर है। उत्तराखंड में कई ऐसी जगहें हैं जहां की प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती हैं। यहां की सुंदरता पर्यटकों का मन मोह लेती है। लेकिन उत्तराखंड में एक ऐसा गांव है जहां पर विदेशियों के जाने पर रोक है। अगर किसी विदेशी ने यहां जाने की कोशिश की, तो उसके खिलाफ सुरक्षाबल कार्रवाई करते हैं। आइए जानते हैं उत्तराखंड के इस अनोखे गांव के बारे में...

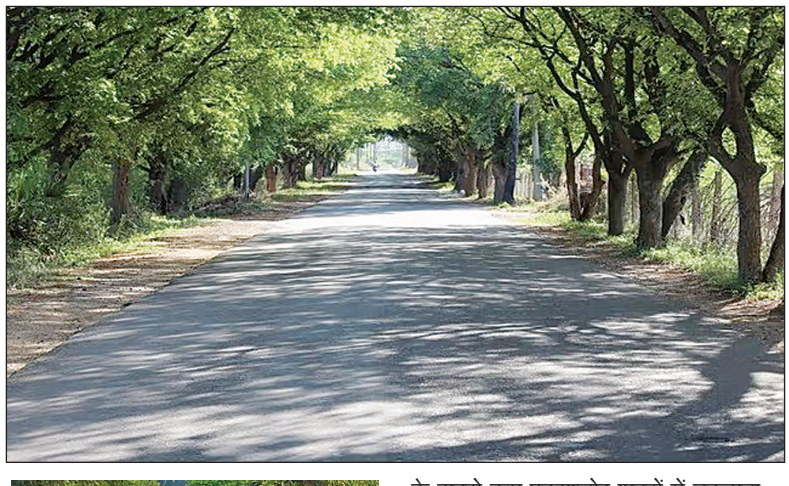

ब्रिटिश शासन के समय से ही सेना की छावनी

उत्तराखंड के चकराता गांव में विदेशियों के आने पर बैन है। यहां पर कोई विदेशी नहीं जा सकता है। दरअसल इस गांव में भारतीय सेना की छावनी है। इसकी वजह से यहां पर सेना के जवानों की तैनाती रहती है। ब्रिटिश शासन के समय से ही यह गांव सेना की छावनी है।

कब से है बैन

आप बर्फीली पहाड़ियों पर जाना चाहते हैं, तो यह स्थान आपके लिए एक अच्छा ऑप्शन है। देश की राजधानी दिल्ली से यह गांव सिर्फ 330 किमी की दूरी पर है। देहरादून के पास स्थित चकराता एक छोटा शहर है।

ब्रिटिश शासन के समय से है इंफैन्ट्री बेस

उत्तराखंड के चकराता में ब्रिटिश शासन के समय से ही इंफैन्ट्री बेस मौजूद है। उत्तराखंड के सबसे कम एक्सप्लोर शहरों में चकराता गांव शामिल है। चकराता गांव शांत और अपनी सुंदरता के लिए मशहूर है। इसके साथ ही यह गांव प्रदूषण मुक्त है।

जानिए कहां-कहां घूम सकते हैं

बेहद कम जनसंख्या वाले चकराता में आपको दो से चार होटल रहने के लिए मिलते हैं। इस गांव को जौंसार बावर के नाम से भी लोग जानते हैं। यहां जौनसारी जाति के लोग निवास करते हैं। यहां से टाइगर फॉल, देववन और चिरमिरी थोड़ी दूरी पर हैं जहां आप घूमने के लिए जा सकते हैं।

चुनावी रंजिश में खूनी संघर्ष पथराव-फायरिंग, 12 घायल

» मेरठ के गांव दुर्वेशपुर में दो पक्ष भिड़े, मामला दर्ज

» पंचायत चुनाव के बाद से चल रहा था विवाद, फोर्स तैनात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मेरठ। जनपद के सरधना थाना क्षेत्र के जाफराबाद दुर्वेशपुर गांव में सोमवार को चुनावी रंजिश में दो पक्षों में मारपीट, पथराव के बाद फायरिंग हुई। इसमें 12 लोग घायल हो गए। घटना के बाद तनाव को देखते गांव में पुलिस फोर्स तैनात कर दी गयी है। बाइक टकराने के विवाद में यह संघर्ष हुआ। ग्राम प्रधान और दूसरे पक्ष ने एक-दूसरे पर आरोप लगाकर तहरीर दी है। पुलिस ने दोनों पक्षों पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

गांव में एक साल पहले पंचायत चुनाव के दौरान दोनों पक्षों में विवाद हो गया था। इसमें अंकुर और प्रधान पति लियाकत पक्ष के लोग आमने-सामने आ गए थे। यही विवाद सोमवार को फिर से गरमा गया। अंकुर पक्ष का युवक बाइक से जा रहा था। आरोप है कि प्रधान पति का भाई इस्लामुद्दीन सामने से आ गया। फिर बाइक टकराने पर दोनों में कहासुनी हो गई। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाया और अपने-अपने लोगों को फोन करके बुला लिया। इसके बाद दोनों पक्षों में मारपीट के बाद पथराव शुरू हो गया। एक पक्ष ने फायरिंग का भी आरोप लगाया है। इस संघर्ष में जावेद, शाहिद, फुरकान, शाबुद्दीन, अंकुर, अंकित, सायमा और वहीदन सहित 12 लोग घायल हो गए। घायलों को उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया। एसपी देहात केशव कुमार भी पहुंचे। उन्होंने दोनों पक्षों को शांति से रहने की चेतावनी दी। पुलिस की ओर से भी दोनों पक्षों पर बवाल करने और शांति भंग करने पर केस दर्ज किया है।

गौरतलब है कि चुनावी रंजिश के कारण यहां तनाव बढ़ा। हाल ही संपन्न हुए विधान सभा चुनाव के बाद दोनों पक्षों के लोगों को उकसाया जा रहा है। गांव में दो गुट बने हैं। सोमवार को गांव में पथराव व फायरिंग का कारण भी पुलिस की ढीली कार्रवाई का नतीजा बताया जा रहा है। करीब एक साल से गांव में तनाव चल रहा है, इसके बावजूद भी पुलिस ने गंभीरता नहीं बरती।

चर्चा है कि विधानसभा चुनाव के नतीजे के बाद एक पक्ष ने ऐलान किया था कि अब उनको देख लेंगे। वहीं, गांव में तनाव को देखते हुए एसपी देहात और सीओ सरधना ने गांव में फ्लैग मार्च निकाला और लोगों से शांति की अपील की।

सांसद प्रतिनिधि और इंस्पेक्टर में नोकझोंक

बागपत सांसद सत्यपाल सिंह के प्रतिनिधि कपिल शर्मा सरधना थाने पहुंचे। इस दौरान उनकी इंस्पेक्टर सरधना से तीखी नोकझोंक हो गई। इंस्पेक्टर ने जांच के बाद निष्पक्ष कार्रवाई करने की बात कही।

संगठन में बदलाव की तैयारी में बसपा

नए चेहरों को दी जा सकती है जिम्मेदारी

» विधान सभा चुनाव में करारी हार पर मंथन, 290 प्रत्याशी नहीं बचा पाए जमानत

» होली बाद हो सकता है बदलाव, संगठन की भूमिका की भी होगी समीक्षा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधान चुनाव में मिली करारी हार के बाद बसपा सुप्रीमो मायावती संगठन को पुनर्गठित कर सकती हैं। होली के बाद संगठन में अहम बदलाव की संभावना है। माना जा रहा है कि इस बार कुछ नए चेहरों को अहम जिम्मेदारी दी जा सकती है।

विधान सभा की सभी 403 सीटों पर प्रदेश में चुनाव लड़ने वाली बसपा ने सिर्फ एक सीट जीती है। 290 सीटों पर तो पार्टी के उम्मीदवार जमानत तक नहीं बचा पाए। मायावती ने इस बाबत सफाई भी पेश की और इशारा किया था कि न तो उनकी सोशल इंजीनियरिंग चल पाई और न ही मुस्लिमों ने बसपा को तवज्जो दी। मुस्लिमों ने सपा का दामन थामा तो अन्य जातियों ने भी बसपा से मुंह मोड़ लिया। इसके अलावा हार के और भी कारण तलाशे जा रहे हैं। संगठन की भूमिका की समीक्षा भी की जा रही है। बताया जा रहा है कि होली के बाद बड़ी बैठक कर उसमें नए सिरे से संगठन का विस्तार किया जाएगा। इसमें पुराने चुनिंदा लोगों को ही अहम पदों पर रखा जाएगा।

वर्तमान में बसपा ने 18 मंडलों में संगठन को बांट रखा है और करीब 50 को-आर्डिनेटर तैनात किए हैं, लेकिन अब नए सिरे से संगठन के विस्तार की तैयारी है।

पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष तक चुनाव हारे

बसपा के प्रदेश अध्यक्ष भीम राजभर भी मऊ विधान सभा सीट से चुनावी रण में उतरे थे लेकिन वे भी बुरी तरह से हारे और तीसरे स्थान पर रहे। इसी तरह पार्टी के अन्य दिग्गज भी चुनाव हार गए हैं। इन्हीं वजहों को देखते हुए संगठन में बदलाव की कवायद हो रही है।

12 से 14 साल तक के बच्चों को लगेगा टीका, बुजुर्गों को बूस्टर डोज

» 16 मार्च से चलेगा अभियान, स्वास्थ्य विभाग ने पूरी की तैयारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कोरोना से बचाव के प्रयासों में अब 12 से 14 साल के बच्चों को टीका लगाया जाएगा। इसके लिए राजधानी लखनऊ सहित प्रदेशभर में 16 मार्च से अभियान चलेगा। विभाग की ओर से इसकी तैयारी पूरी कर ली गई है।

लखनऊ के अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डा. एमके सिंह ने बताया कि 12 से 14 साल के बच्चों की संख्या करीब तीन लाख हैं। शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में अभियान चलेगा। इसके लिए सभी जिलास्तर के अस्पतालों में रोज टीकाकरण होगा। इसमें सिविल, बलरामपुर, डफरिन, झलकारीबाई, रानी लक्ष्मीबाई, लोकबंधु, श्रीराम सागर मिश्र, लोहिया, केजीएमयू व महानगर भाऊराव देवरस समेत दूसरे अस्पताल शामिल हैं। वहीं ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के सामुदायिक-प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में अभियान चलेगा। इसके अलावा बुजुर्गों को बूस्टर डोज भी लगाने की तैयारी चल रही है। बच्चों को नया टीका लगाया जाएगा। कार्बीवैक्स खास बच्चों के लिए है। टीके की दो खुराक बच्चों को लगाई जाएंगी। पहला टीका लगने के 28 वें दिन दूसरी डोज लगाई जाएगी। टीका लगवाने के लिए बच्चों को पहले से पंजीकरण कराने की जरूरत नहीं है। मौके पर पंजीकरण होगा और टीका लगाया जाएगा। इसके लिए आधार कार्ड दिखाना होगा।

यूपी में द कश्मीर फाइल्स फिल्म टैक्स फ्री

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। चर्चित फिल्म द कश्मीर फाइल्स उत्तर प्रदेश में टैक्स फ्री होगी। कार्यवाहक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कर विभाग को इस फिल्म को टैक्स फ्री करने के निर्देश दिए हैं। शासन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि अधिकारियों को फिल्म को टैक्स फ्री करने का आदेश जारी करने को कहा गया है।

बता दें कि इससे पहले छह राज्यों सरकारों ने फिल्म को टैक्स फ्री करने का आदेश जारी कर चुके हैं। इनमें हरियाणा, गुजरात, मध्यप्रेदश, कर्नाटक, गोवा और त्रिपुरा शामिल हैं। कुल मिलाकर विवेक अग्निहोत्री की फिल्म द कश्मीर फाइल्स को अब तक सात राज्यों में टैक्स फ्री किया जा चुका है। इसके साथ ही कर्नाटक में इस फिल्मी की स्क्रीनिंग भी की जाएगी। वहीं फिल्म द कश्मीर फाइल्स बॉक्स ऑफिस पर भी अच्छा कलेक्शन कर रही है और राज्य सरकारों द्वारा भी फिल्म को बढ़ावा मिल रहा है।

बाराबंकी में बदमाशों ने महिला को बेरहमी से पीटा, लूटपाट

» अस्पताल में भर्ती पुलिस कर रही मामले की जांच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बाराबंकी। दरियाबाद थाने के मियागंज गांव स्थित एक घर में सोमवार की रात नकाबपोश बदमाशों का कहर टूटा। दीवार फांद घर में घुसे बदमाशों ने महिला के मुंह में कपड़ा ठूंसकर बेहरमी से पिटाई कर मरणासन्न कर दिया। घर में रखी नकदी समेत जेवरात भी उठा ले गए। वहीं घर के नए कपड़ों समेत बैनामा के दस्तावेज, बच्चों की मार्कशीट को आग लगा दिया। पुलिस ने घायल महिला को सीएचसी में भर्ती कराया है।

दरियाबाद थाने के मियागंज गांव के शिवकुमार प्रजापति के घर में रात करीब 12 बजे के तीन बदमाश घुसे। शिवकुमार ने बताया कि घर के अंदर उसकी पत्नी शिवकुमारी सो रही थी। वह घर से चंद कदम दूर हाते में था जबकि बाहर दरवाजे पर बड़ा बेटा श्रवण व छोटा बेटा था। बदमाशों ने पत्नी के मुंह में कपड़ा ठूंसकर बेरहमी से पीटा और 26 हजार रुपए और जेवरात लूटकर ले गए। बेटा श्रवण आईटीआई का छात्र है। उसकी आईटीआई के मार्कशीट, बैनामे के दस्तावेज व जरूरी अभिलेख के साथ घर के नए कपड़े भी जला दिए। चूल्हा भी तोड़ा।

अब लोक सभा चुनाव की तैयारी में जुटी भाजपा

» 2024 लोक सभा चुनाव विपक्ष के लिए बड़ी चुनौती, 4पीएम की परिचर्चा में मंथन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने 37 साल के पुराने रिकॉर्ड को तोड़कर नया इतिहास बनाया है। यूपी सर्वाधिक लोकसभा सीटों वाला प्रदेश है। इसके अलावा देश की गद्दी पर कौन बैठेगा वो भी यूपी से ही तय होता है। अब भाजपा ने 2024 की तैयारी शुरू कर दी है। इस मुद्दे पर वरिष्ठ पत्रकार सुशील दुबे, श्वेता आर रश्मि, अरूणा सिंह, शिशिर श्रीवास्तव, उमाशंकर दुबे और 4पीएम के संपादक संजय शर्मा के बीच लंबी परिचर्चा हुई।

परिचर्चा

रोज शाम को छह बजे देखिए 4PM News Network पर एक ज्वलंत विषय पर चर्चा

सुशील दुबे ने कहा, इस बार यूपी में जो सरकार बनी है उसका 2024 का पूरा ध्यान है। इस बार डिप्टी सीएम वाला लोड नहीं होगा, अगर लोड लिया जाएगा तो एक-दो नहीं बल्कि चार डिप्टी सीएम बनेंगे। एक आगरा मंडल से, एक पूर्वांचल से जो एमएलसी बनकर संतुष्ट हो गए। तीसरा बृजेश पाठक और एक बैकवर्ड से आएगा। केशव पांच साल डिप्टी सीएम रह लिए। सरकार से ज्यादा संगठन की जिम्मेदारी बड़ी है। ऐसे में केशव संगठन में जाकर 24 की सरकार बनाएंगे। उमाशंकर दुबे ने कहा, भाजपा हमेशा चुनाव मोड में रहती। भाजपा अब लोक सभा चुनाव की तैयारी में लग गई। विधायक दल का नेता चुनना औपचारिकता है। इस बार भी योगी का चेहरा ही रहेगा। कैबिनेट में कौन कौन रहेगा इस पर मंथन होना है। 2024 का चुनाव समाजवादी पार्टी के लिए बड़ी चुनौती होगी। श्वेता आर रश्मि ने कहा मैं उमाशंकर की बात से सहमत हूं। जब से बीजेपी सत्ता में आई है 2014 से लेकर अब तक वह हर समय बीजेपी चुनावी मूड में रहती। 2024 इनको इसलिए चाहिए क्योंकि आरएसएस के 100 साल पूरे हो रहे। हिंदू राष्ट्र का सपना इनको पूरा करना है। शिशिर श्रीवास्तव ने कहा, गोरखपुर में सीएम योगी चुनाव लड़ते हैं। ईवीएम की घटना घटती है। बावजूद नौ की नौ विधानसभा जीती जातीं है। ऐसे में सुशासन सरकार का था, जो अनाज बांटा हैं, उसका असर भी दिखा। पूर्वांचल में बसपा का वोट भाजपा में ट्रांसफर हुआ। अरुणा सिंह ने कहा पंचायत चुनाव में सरपंच बने बीजेपी के जबकि विपक्षी दलों के लोग ने अच्छा कमबैक किया था। 24 में दो साल है, इलेक्शन मोड में रहे ये लोग, मुझे नहीं लगता कि रथ आगे चलेगा।

क्या यादव कोटे से रामचंद्र बनेंगे मंत्री

यादव कोटे से मंत्री बना भाजपा चल सकती है बड़ा दांव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी में नई सरकार के गठन की कवायद चल रही है। दिल्ली से लेकर लखनऊ तक भाजपा संगठन लगातार शीर्ष पदाधिकारियों के साथ मंथन कर रहा है कि नई कैबिनेट में किस तरह जातिगत समीकरण साधा जाए। ताकि 2024 में भी इसका फायदा पार्टी को मिल सके। फिलहाल यूपी की जिम्मेदारी अमित शाह के कंधों पर है।

अयोध्या की रुदौली विधानसभा सीट से तीसरी बार विधायक बने हैं रामचंद्र यादव

विधायक दल का नेता चुनना औपचारिकता भर है, योगी आदित्यनाथ का मुख्यमंत्री बनना तय है। नई कैबिनेट में बेबीरानी मौर्य, स्वतंत्र देव सिंह, ब्रजेश पाठक, पंकज सिंह, एके शर्मा, जितिन प्रसाद, केशव मौर्य सहित कई पुराने चेहरों को भी जगह मिलनी सकती हैं। वहीं भाजपा यादव वोट बैंक में सेंध लगाने की भी तैयारी कर रही है। माना जा रहा है कि रूदौली विधानसभा सीट से जीते रामचंद्र यादव को मंत्री बनाकर वह बड़ा दांव खेल सकती है। रामचंद्र के मंत्री बनने से यादव समाज भी खुश होगा तो वहीं दूसरी तरफ संदेश जाएगा कि भाजपा सबका साथ सबका विकास के मंत्र पर चल रही है। रामचंद्र यादव तीसरी बार विधायक बने हैं। वर्ष 2012 से लेकर अब तक यह तीसरा अवसर है, जब से रुदौली की जनता ने बीजेपी के रामचंद्र यादव को सर आंखों पर न सिर्फ बिठा रखा है, बल्कि हर बार उनके साथ जनता का जनादेश बढ़ता ही गया है। मिल्कीपुर सीट सुरक्षित होने के बाद पहली वर्ष 2012 के चुनाव में भाजपा प्रत्याशी के रूप रामचंद्र यादव रुदौली चुनाव लड़ने आए। तब वे सपा के दो बार के विधायक रहे अब्बास अली जैदी रुश्दी को महज 800 के करीब मतों से पराजित कर पाने में कामयाब हुए। लेकिन पांच वर्ष के अपने कार्यकाल में ही वे जनता के दिलों व दिमाग में इस कदर घर बना चुके थे कि अगले वर्ष 2017 में ही 90 हजार के करीब मत पाकर रूश्दी को दूसरी बार 33 हजार के लंबे फासले से हराने में सफल हुए। इस बार भी जनता ने रामचंद्र यादव पर भरोसा जताकर पिछले सारे रिकार्ड धराशाई कर दिए। वर्ष 2017 के मुकाबले तीन हजार अधिक 94 हजार मत पाकर जीत के अंतर को 40 हजार बढ़ाकर उन्हें रुदौली से ही तीसरी बार जिताया।

फोटो: सुमित कुमार

होली का लुत्फ लखनऊ। तीन दिन बाद होली है। स्कूल-कॉलेज में होली का उत्सव दिखने लगा है। आज जब होली की छुट्टियां घोषित हुई तो नेशनल कॉलेज के छात्र और छात्राओं ने जमकर खेली होली। एक-दूसरे को रंग-गुलाल लगाया। होली की मुबारकबाद दी।

संघर्ष में डटे रहना ही कांशीराम को सच्ची श्रद्धांजलि : मायावती

बसपा प्रमुख ने कांशीराम की याद में किए गए कामों का किया जिक्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बसपा प्रमुख मायावती ने कांशीराम के जन्मदिन पर कहा कि यह चमचा युग है। यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने बामसेफ, डीएस-4 और बसपा के संस्थापक कांशीराम को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद कहा कि अपने खून-पसीने से अर्जित धन के बल पर डटे रहना कोई मामूली बात नहीं है। मायावती ने कहा कि देश में करोड़ों दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों और अन्य अपेक्षितों को लाचारी और मजलूमी की जिंदगी से निकालकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने के बीएसपी के संघर्ष में दृढ़ संकल्प के साथ लगातार डटे रहना ही मान्यवर कांशीराम को सच्ची श्रद्धांजलि है।

मायावती ने कहा कि उन्होंने बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के आत्मसम्मान और स्वभिमान के मानवतावादी मूवमेंट को जीवंत बनाने के लिए आजीवन कड़ा संघर्ष किया और अनंत कुर्बानियां दीं। इसके बल पर काफी सफलता भी अर्जित की और देश की राजनीति को नया आयाम दिया। मायावती ने कांशीराम की याद में किए गए कामों का जिक्र करते हुए कहा ऐसे महापुरुष की यादों को चिर स्थाई बनाने के लिए बीएसपी की यूपी में रही सरकारों के दौरान उनके नाम पर अनेक भव्य स्थलत, पार्क, शिक्षण संस्थान, अस्पताल और आवासीय कॉलोनी आदि बनाए गए और जनकल्याणकारी योजनाएं चलाईं गईं। राजधानी में स्थापित कांशीराम स्मारक इनमें सर्वप्रमुख है।

रितेश पांडेय को लोकसभा में पार्टी नेता के पद से हटाया मुख्य सचेतक भी बदला

यूपी चुनाव में करारी हार के बाद बसपा ने संगठन में बदलाव करना शुरू कर दिया है। मायावती ने लोकसभा में रितेश पांडेय को पार्टी नेता के पद से हटा दिया है। उनकी जगह गिरीश चंद्र जाटव को पार्टी का नेता बनाया गया है। पांडेय अंबेडकर नगर से सांसद हैं। इसी तरह गिरीश चंद्र जाटव को हटाते हुए संगीता आजाद को मुख्य सचेतक बनाया गया है। जबकि राम शिरोमणि वर्मा लोकसभा में उप नेता के पद पर बने रहेंगे। इस संबंध में बसपा ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र भेज दिया है।

एमएलसी चुनाव के लिए 19 तक कर सकेंगे नामांकन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव के बाद अब विधान परिषद के चुनाव को लेकर सरगर्मी बढ़ गई है। उत्तर प्रदेश विधानमंडल में उच्च सदन के लिए 36 सदस्यों के चुनाव के लिए आज से नामांकन शुरू हो गया है। विधान परिषद चुनाव के लिए मतदान नौ अप्रैल को होगा और इसका परिणाम 12 को आएगा। 36 सीटों के लिए होने वाले चुनाव के लिए नामांकन दो चरण में होगा।

विधान परिषद में अभी भी संख्या बल के मामले में समाजवादी पार्टी भारतीय जनता पार्टी से आगे है। प्रदेश में लगातार दूसरी बार सरकार बनाने जा रही भाजपा इस संख्या बल को पीछे छोड़ने के प्रयास में है। नामांकन प्रक्रिया 19 तक चलेगी, जबकि छह अन्य सीटों के लिए आज से शुरू होकर नामांकन 22 तक दाखिल होंगे। प्रदेश में 29

निर्वाचन क्षेत्रों की 30 सीटों के लिए अधिसूचना चार फरवरी को जारी हो चुकी थी। साथ ही नामांकन पत्र भी भरने शुरू हो गए थे, किंतु बाद में सात फरवरी को इन चुनाव को स्थगित कर दिया गया था।

गौरतलब है कि सूबे के विधान परिषद की स्थानीय निकाय कोटे की 36 सीटों पर होने वाले चुनाव में जिला पंचायत सदस्य, क्षेत्र पंचायत के सदस्य, ग्राम प्रधान, शहरी निकायों, नगर निगम, नगर पालिका व नगर पंचायत के सदस्यों के साथ ही कैंट बोर्ड के निर्वाचित सदस्य भी वोटर होते हैं।

यूपी चुनाव में मिली करारी हार के कारणों को तलाशेंगी प्रियंका गांधी

आज होने वाली बैठक में होगा हार पर विचार-विमर्श

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की करारी हार पर मंथन करने के लिए आज पार्टी की यूपी प्रभारी और महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने एक मीटिंग बुलाई है। इसमें उन कारणों पर विचार विमर्श किया जाएगा, जिसकी वजह से मेहनत करने के बाद भी पार्टी की इतनी बुरी हार हुई है। इस बैठक में प्रदेश में पार्टी के वरिष्ठ नेता हिस्सा लेंगे।

बता दें कि प्रियंका गांधी ने इस चुनावी समर के दौरान सबसे अधिक रैलियां, रोड शो किए थे। माना जा रहा है कि इस बैठक में कुछ बड़ी बातें सामने निकलकर आ सकती हैं। इससे पहले कांग्रेस में राष्ट्रीय स्तर पर की बैठक में भी इस बारे में चर्चा हुई

थी। ये बैठक पार्टी की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने अपने आवास पर बुलाई थी। बता दें कि कांग्रेस को इस चुनाव में महज दो सीट ही मिली हैं। वहीं कुछ छोटी पार्टियां सीटों के मामले में कांग्रेस से आगे निकल गई हैं। इस चुनाव में कांग्रेस के करीब 387 प्रत्याशियों की जमानत तक जब्त हो गई। इस मामले में कांग्रेस पहले नंबर पर रही है।

प्रियंका गांधी की ही बात करें तो उनका सक्रिय राजनीति में काफी देर से आना हुआ है। हालांकि वर्ष 2004 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने रायबरेली और अमेठी में अपनी मां और भाई राहुल गांधी के समर्थन में प्रचार का जिम्मा संभाला था। इसके बाद के विधानसभा चुनावों में भी प्रियंका ने इन दोनों क्षेत्रों से अपनी पार्टी को जिताने के लिए काम किया था। 23 जनवरी 2019 को प्रियंका ने आधिकारिक रूप से राजनीति में कदम रखा था और उन्हें कांग्रेस में महासचिव की जिम्मेदारी दी गई थी। साथ ही प्रियंका को पूर्वी उत्तर प्रदेश का जिम्मा भी दिया गया था।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।